जैनदर्शन का केन्द्रिय सिद्धांत : अकर्तावाद

- डॉ. वीरसागर जैन

आजकल जब-जब जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धांतों की बात चलती है तो लोग अहिंसा, अनेकांतवाद, अपरिग्रहवाद आदि की ही चर्चा करते हैं | वे उनमें 'अकर्तावाद' नाम के एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण जैन सिद्धांत को कहीं गिनते-गिनाते ही नहीं, उसका स्वरूप समझना-समझाना तो बहुत दूर की बात है | जबकि 'अकर्तावाद' जैनदर्शन का एक अत्यंत प्रमुख सिद्धांत है | इतना प्रमुख सिद्धांत है कि इसे हम जैनदर्शन का केन्द्रिय सिद्धांत कह सकते हैं, क्योंकि जैनदर्शन के सभी सिद्धांतों में, सभी विषयों में अकर्तावाद का रूप झलकता है | यदि इस अकर्तावाद को ठीक से न समझा जाए तो जैनदर्शन के अन्य सिद्धांत भी ठीक से नहीं समझे जा सकते |

यदि कदाचित् कोई व्यक्ति जैन सिद्धांतों की सूची में 'अकर्तावाद' को गिना भी देगा तो वह उसकी व्याख्या मात्र इतनी ही करेगा कि जैनदर्शन के अनुसार ईश्वर सृष्टि का कर्त्ता-धर्ता-हर्ता नहीं है- यह जैन दर्शन का अकर्तावाद सिद्धांत है, परन्तु यह इस सिद्धांत की अपूर्ण व्याख्या है |

जैनदर्शन का अकर्तावाद सिद्धांत बहुत व्यापक है | इसके अनुसार जगत का कोई भी पदार्थ किसी भी अन्य पदार्थ का किंचित् भी कर्ता, धर्ता, हर्ता नहीं है | ईश्वर तो सृष्टि का कर्ता-धर्ता-हर्ता है ही नहीं, परन्तु परमार्थ से जगत का कोई भी पदार्थ किसी भी अन्य पदार्थ का किंचित् भी कर्ता-धर्ता-हर्ता नहीं है |

यदि आगे चलें तो अन्य पदार्थ का ही नहीं, निश्चय से कोई भी पदार्थ अपना स्वयं का भी किंचित् भी कर्ता-धर्ता-हर्ता नहीं है | परपदार्थ तो स्वयं से अत्यंत भिन्न ही हैं, अतः उनका तो कोई कुछ कर्ता-धर्ता-हर्ता है ही नहीं, परन्तु कोई पदार्थ स्वयं का भी कर्ता-धर्ता-हर्ता परमार्थ से सिद्ध नहीं होता| स्वयं भी अनादि-अनंत अकृत्रिम सत् है, उसका कोई क्या करेगा ? द्रव्य स्वभाव से तो अकृत है ही, उसकी पर्याय भी सब स्वयं नियमित उत्पन्न-विलीन हो रही हैं, उन्हें भी कोई कैसे क्या करेगा, वे स्वयमेव जैसी होनी हैं, वैसी ही हो रही हैं, उन्हें बदला नहीं जा सकता | वे केवलज्ञान में भी वैसी ही झलक चुकी हैं, उन्हें इंद्र-जिनेन्द्र भी अन्यथा नही कर सकते |

इतना ही नहीं, यदि और आगे बढ़कर देखा जाए तो जैन दर्शन के अनुसार कोई जीव अपनी ज्ञानपर्याय का भी कर्ता नहीं है | कुछ करना तो दूर, सब कुछ जानना भी निश्चित ही है; ज्ञान की कौन-सी पर्याय कब किस पदार्थ को किस रूप से जानेगी –यह भी निश्चित ही है, उसमें भी फेर-बदल नहीं किया जा सकता; जैसा कि 'परीक्षामुखसूत्र' के निम्नलिखित सूत्र में स्पष्ट कहा गया है, यथा-

'स्वावरणक्षयोपशमलक्षणयोग्यतया हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति|'[1]

अर्थ- स्वावरणक्षयोपशमरूप योग्यता के द्वारा ही ज्ञान प्रतिनियत पदार्थ को जानने की व्यवस्था करता है |

भावार्थ यह है कि ज्ञान कब किस ज्ञेय को जानेगा - यह भी निश्चित ही है | उसका व्यवस्थापक उसका अपना तदावरणीय कर्म का क्षयोपशम है, अन्य कुछ नहीं | ज्ञेय पदार्थ भी ज्ञान का कारण नहीं है | ज्ञान ज्ञेय से उत्पन्न भी नहीं

---

[1] परीक्षामुख, आचार्य माणिक्यनन्दी, सूत्र- 2/9

होता और ज्ञान ज्ञेय के आकार का भी नहीं होता | ज्ञान स्वतन्त्र है और ज्ञेय भी स्वतन्त्र है | कोई किसी के आधीन नहीं है, कोई किसी का किंचित् भी कर्ता-धर्ता-हर्ता नहीं है|

इस प्रकार हमें जैनदर्शन के अकर्तावाद सिद्धांत को पूरी सूक्ष्मता के साथ समझना होगा, तभी हमें जैनदर्शन का वैशिष्ट्य समझ में आयेगा, तभी हमें जैनदर्शन का असली मर्म समझ में आयेगा| केवल इतना-सा स्थूल कथन करना पर्याप्त नहीं है कि ईश्वर सृष्टि का कर्ता नहीं है अथवा कोई किसी के सुख-दुःख/जीवन-मरण/लाभ-हानि का कर्ता नहीं है | अपितु हमें इस सिद्धांत की गहराई में जानना होगा कि परमार्थ से कोई भी किसी का कुछ भी कर्ता नहीं है | एक-एक समय की पर्याय स्वतंत्र है, स्वयम्भू है | यही जैनदर्शन का अकर्तावाद सिद्धांत है|

इसे समझे बिना जैनदर्शन के अन्य सिद्धांतों को भली-भाँति नहीं समझा जा सकता | यदि कोई व्यक्ति अकर्तावाद को समझे बिना अहिंसा, अपरिग्रह आदि सिद्धांतों को समझेगा तो वह वहां अकर्तावाद सिद्धांत का उल्लंघन करके बड़ी भारी गलती करेगा, वह उन सिद्धांतों को भी ठीक से नहीं समझ सकेगा, अतः सर्वप्रथम जैनदर्शन के अकर्तावाद सिद्धांत को भलीभांति समझना चाहिए, तभी अन्य सर्व सिद्धांत भी भलीभाँति समझे जा सकेंगे| अनेक लोग ऐसे देखे गए हैं जो जैनदर्शन के अकर्तावाद सिद्धांत को भलीभाँति नहीं समझते और इसीलिए वे उसके अन्य सिद्धांतों को भी भलीभाँति नहीं समझा पाते, उनमें गलतियाँ कर बैठते हैं |

जैनदर्शन के अकर्तावाद सिद्धांत को समझना ही वास्तव में जैनदर्शन को समझना है, क्योंकि अकर्तावाद ही जैनदर्शन का प्राण है | जैनदर्शन के अकर्तावाद को समझे बिना कोई सम्यग्दृष्टि नहीं हो सकता | जिसे इसमें शंका है, वह मिथ्यादृष्टि है और जो इस पर पक्की श्रद्धा करता है, वह सम्यग्दृष्टि है |

जैनदर्शन के अकर्तावाद सिद्धांत को समझ लेने के कारण ही ज्ञानी पुरुष कभी कैसी भी परिस्थिति हो, दुखी-सुखी नहीं होते | वे जानते हैं कि जब जो होना है, वह निश्चित है, कोई इंद्र-जिनेन्द्र उसे अन्यथा नहीं कर सकते |

जैनदर्शन के अकर्तावाद सिद्धांत को समझे बिना किसी का दुःख मिट नहीं सकता, चाहे वह कितना भी ज्ञान-चारित्र वाला बन जाए |

प्रश्न – जैनदर्शन के अनुसार यदि कोई किसी का कुछ नही करता है, सब कुछ स्वयं ही होता है, तो जैन आचार्यों ने इतने उपदेश देने वाले ग्रन्थ क्यों बनाये हैं और उनमें ऐसा करो, ऐसा मत करो, इत्यादि उपदेश क्यों दिया है ?

उत्तर - उपदेश का तो स्वरूप ऐसा ही है | उपदेश तो हमेशा अच्छा ही दिया जाएगा, बुरा उपदेश कभी नहीं दिया जाएगा | ज्ञानी जीवों का भी राग ऐसा ही होता है, वे भी जब उपदेश देंगे तो ऐसा ही कहेंगे कि ऐसा करो, ऐसा न करो, ऐसा करने से तुम्हारा भला हो जाएगा, इत्यादि | परन्तु वस्तुस्वरूप उपदेश के अनुसार परिणमन नहीं करता, वह तो अपनी सुनिश्चित वस्तु-व्यवस्था के अनुसार ही परिणमन करता है | यही कारण है कि ज्ञानी जन भी उपदेश देते समय भी ऐसा पक्का जानते हैं कि होगा तो वही जो होना होगा, उपदेश तो ऐसे ही भूमिका के रागानुसार हो रहा है | तथा इसी कारण से उन्हें उपदेशानुसार कार्य होने या नहीं होने पर हर्ष-विषाद नहीं होता |

हमें इस विषय को सावधानी से समझना होगा | उपदेश की शैली भिन्न है और वस्तु की व्यवस्था भिन्न है | उपदेश की ऐसी शैली के कारण भी हम लोगों को अकर्तावाद समझ में नहीं आता | परन्तु एक बार हमें यह स्पष्ट समझना ही होगा कि वस्तु की व्यवस्था तो स्वत: सुव्यवस्थित ही है – 'अलंघ्यशक्तिर्भवितव्यतेयं' |